मन व ध्यान के विषय पर शास्त्रों से लिए गए श्लोक १

निर्मल दर्पण

परमार्थसार, श्लोक ९

आदर्शे मलरहिते
यद्वद्वदनं विभाति तद्वदयम्।
शिवशक्तिपातविमले
धीतत्त्वे भाति भारूपः॥

जिस प्रकार एक निर्मल दर्पण में मुख दिखाई देता है,
उसी प्रकार दैवी कृपा के अवतरण [शक्तिपात] से निर्मल हुई बुद्धि में
प्रकाशस्वरूप आत्मा के दर्शन होते हैं।

© २०२३ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।

'परमार्थसार' [परम सत्य का सार] की रचना काश्मीर शैवमत के विद्वान व ऋषि अभिनवगुप्त जी ने १०वीं शताब्दी में की थी। अद्वैतवाद पर आधारित सिखावनियों का यह संग्रह, इस दृष्टिकोण को प्रस्तुत करता है कि शिव ही पूर्ण, सर्वव्यापी परम सत्य है और इसीलिए समस्त सृष्टि का एकमात्र स्रोत है। ऊपर उद्धरित श्लोक यह वर्णन करता है कि किस प्रकार श्रीगुरु की दिव्य कृपा के सम्प्रेषण यानी शक्तिपात से परिशुद्ध हुई बुद्धि द्वारा मनुष्य के सच्चे सार अर्थात् आत्मा को जाना जा सकता है।